महिमा तिनकी कबलौं गावैं। जिन जानैं कै जिन धुनि पावैं।
वा सुर इन्द्र जाय सो जानैं। बाकी तौ सामान्य बखानैं।।८।।

जे जिन मन्दिर सुमरत भाई। पाप कटें पुन्य बंध कराई।
तौ दरशन की महिमा सारी। कहै कौन फल की विधि भारी।।९।।

(दोहा)

तातैं नन्दीश्वर विषैं, जे हैं जिनके थान।
सो भव सुमरो थुति करो, पूजो शुभ फल धाम।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक दिशासम्बन्धि पूजा

प्रथम पूर्व दिशा पूजा

(गीता छन्द)

जाय नन्दीश्वर सु अष्टम दीप की पूरब दिसा।
लक्ष एक अंजन चार दधि गिरि आठ रतिकर गिर लसा।।
तिन ऊपरें जिन थान इक इक थाप तो इहा भाय जी।
हौं जजौं मन वच काय भावन गात सकत न थाय जी।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(अडिल्ल छन्द)

निरमल जल हम लेय कनकपातर धरौ।
अपनौं तन जल धोय सपरकैं सुध करौ॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो हों जलतें जजौं महा थुति आन हैं॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चंदन आनि सुगंध भ्रमर मन मोहनौ।
करके भाव विशुद्ध पात्र लै सोहनौ॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो हों चंदन लाय जजौं थुति आन हैं॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं०

अक्षत उज्ज्वल खंड बिना लाए सही।
धार मनोहर पातर अपने कर लही॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो अक्षत तें जजौं भक्त विध ठान हैं॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तायाऽक्षतं नि०

देवद्रुम के पुष्प महा गंध धार जी।
तिनकी गूंथी माल आप कर प्यार जी॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो पूजौं पुष्प लाय घनै तजि मान हैं॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

नाना रस नैवेद भेद बहू लाइयौ।
मोदक आदि अनूप कंठ गुण गाइयौ॥

नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो पूजौं नैवेद आप तजि मान हैं॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक मणिमय सार तासतैं तम नसै।
सो भर कंचन थाल हाथ में सो लसै॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो दीपक तैं जजौं भक्ति उर आन हैं॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०

चन्दन अगर मिलाय धूप कीनी सही।
सो लै अपनै हाथ अगनि माहीं दही॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो पूजौं लै धूप हियै धर ध्यान हैं॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल लोंग बदाम और खारक सही।
इत्यादिक फल त्याय घालि पातरमही॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो हौं फलतें जजौं महा थुतिगान हैं॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल चंदन अक्षत पुह चरु दीपक सही।
धूप फला यह आठ अरघ इनकी लही॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो मैं पूजों अरघ थकी थुति आन हैं॥१०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

नन्दीश्वर पूरब दिश अन्जनगिरि सही।
ता ऊपर जिनथान अकीर्तम पुन मही॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघ हरैं॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायामञ्जनगिरिसम्बन्धिजिनालयायाऽर्घं नि०

याही अंजनगिर के पूरब दिस सही।
दधिगिर एक महान जहाँ जिन थलमही॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघ हरैं॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशादधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं नि०

अंजनगिर पूरब दिस वापिक मुख कहो।
रतिकर गिर ता शीश थान जिनवर रहो॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनैं अघ हरैं॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशावापीसम्बन्धिप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं०

याही वापी के मुख रतिकर दूसरा।
ता ऊपर जिन भवन तीर्थ अघ मलहरा॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघ हरैं॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशावापीसम्बन्धिद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

पूरब दिश अंजनगिर की दक्षिण दिशा।
वापिक में दधगिरा तहाँ जिनथल लसा॥

जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः दक्षिणदिशासम्बन्धिवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं नि०

पूरब अंजन दक्षिण वापी मुख सही।
रतिकर प्रथम बखान तहाँ जिनग्रह मही।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं०

याहि वापिका के मुख दुतिया रतिकरा।
ता ऊपर जिन थान महा पातिक हरा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

नन्दीश्वर पूरब अंजन पच्छिम दिसा।
वापिक मध दधिगिरा तहाँ जिनथल बसा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः पश्चिमवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धि जिनालयायार्घं नि०

याही वापिक के मुख प्रथम सु रतिकरा।
तापै जिनका भवन महा तीरथ घरा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं०

दूजो रतिकर याही वापिक मुख कहौ।
ता ऊपर जिन भवन अकीरतम बन रहौ।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

नन्दीश्वर पूरब अंजन उत्तर सही।
वापिक मध दधि गिरा तहाँ जिनथल कही।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः उत्तरदिशासम्बन्धिवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धि जि०

याही वापिक के मुख प्रथम सु रतिकरौ।
ताके ऊपर जिनकौ थानक अवतरौ।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः उत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि जि० अर्घं०

याही वापिक मुख पर रतिकर दूसरा।
ता ऊपर जिन गेह सकल पातिक हरा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः उत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

ऐसे नन्दीश्वर पूरब दिस गिर सही।
तिन त्रयोदश पै इक इक जिन थल धुनि कही।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिश्येकांजनगिरिचतुर्दधिगिर्यष्टरतिकरे तित्रयोदश-जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

नन्दीश्वर पूरब दिशा, अष्टम दीप मँझार।
त्रयोदश जिनके थान हैं, सो पूजों थुति धार।।१।।

(वेसरी छन्द)

पूरब दिस नन्दीश्वर माहीं। एक महा गिर अंजन पाहीं।
ढोलाकार लोग आकारा। श्याम रतन का है पिंड सारा।।२।।

जोजन सहस चौरासी सारो। धरती तैं नभ माहिं उचारो।
इतनें जोजन ही सुन भाई। है तिस व्यास भौम चौड़ाई।।३।।

जेता त्वंग व्यास जे ताई। नीचै ऊपर इक सा पाई।
जाकी जोति सबै भू व्यापी। नास किया तम धर परतापी।।४।।

महा मनोज्ञ शिखर यह होनों। इसतें लख जोजन चवकोनों।
अन्तर एता जाय सुभाई। चव दिस चार वापिका पाई।।५।।

सो वापिक भी भिन भिन गाई। लाख लाख जोजन बतलाई।
ए लंबा विस्तार बताया। एता ही तिन व्यास सु गाया।।६।।

चौखूटी वापिक अकारा। कंचन पाल महा दृढ़ धारा।
मुख लौं जल भरया अति सोहै। चलें तरंग लखत मन मोहै।।७।।

तिन चारित में बिच बिच जानों। एक एक दधिगिरि सुखदानौ।
श्वेत वरण मणि फटिक समाना। लंबे चौड़े इक से जाना।।८।।

ए भी ढोलाकार बताए। दश दश सहस जोजना गाए।
इनही इक इक वापी जानो। मुख पै दो दो रतिकर मानौं।।९।।

ऐसे एक दिसा के भाई। त्रयोदस गिर गाए सुखदाई।
इन सब इकपै इक जिन थाना। सो हों जजौं छांड़ि सब माना।।१०।।

(दोहा)

यह जिनमन्दिर माल शुभ, जो भव कंठ धराय।
सो ता कीरत और कों, सुर हरषै जस गाय।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं नि०

इति पूर्वदिशा पूजा समाप्त

अथ दक्षिणदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(चौपाई)

नन्दीश्वर दक्षिण दिस जाय, त्रयोदस जिनके थान सुठाय।
ऐसी शक्ति तो दीसे नाहिं, तातैं जजौं थाप इह ठाहिं।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(गीता छन्द)

नीर नीकौ क्षीर दधि सो जीव बिन प्राशुक इसौ।
धर कनक झारी माहिं कर ले कहौ गुन मुख बुधि जिसौ।।

શ્રી નંદીશ્વરદ્વીપ-જિનપૂજા

(અડિલ્લ છંદ)

સરવ પરવમેં બડૌ અઠાઈ પરવ હૈ,
નંદીશ્વર સુર જાહિં લિયે વસુ દરવ હૈ;
હમેં શક્તિ સો નાહિં ઈહાં કરિ થાપના,
પૂજૌં જિનગૃહ પ્રતિમા હૈ હિત આપના.

ૐ હ્રીં શ્રીનંદીશ્વરદ્વીપે દ્વિપંચાશજ્જિનાલયસ્થ જિનપ્રતિમાસમૂહ! અત્ર અવતરત અવતરત સંવૌષટ્ ઇતિ આહ્વાનનમ્,—અત્ર તિષ્ઠત તિષ્ઠત ઠઃ ઠઃ સ્થાપનમ્,—અત્ર મમ સન્નિહિતો ભવત ભવત વષટ્ સન્નિધિકરણમ્.

કંચન મણિમય ભૃંગાર તીરથ નીર ભરા,
તિહું ધાર દઈ નિરવાર જામન મરન જરા;
નંદીશ્વર શ્રીજિનધામ બાવન પુંજ કરોં,
વસુ દિન પ્રતિમા અભિરામ આનંદભાવ ધરોં.

ૐ હ્રીં શ્રીનંદીશ્વરદ્વીપે પૂર્વપશ્ચિમોત્તરદક્ષિણે દ્વિપંચાશજ્જિનાલયસ્થ જિનપ્રતિમાભ્યઃ જન્મજરામૃત્યુવિનાશનાય જલં૦

ભવતપહર શીતલ વાસ, સો ચંદન નાહીં;
પ્રભુ યહ ગુન કીજૈ સાંચ, આયો તુમ ઠાંહીં. નંદી૦

(ચંદનં)

ઉત્તમ અક્ષત જિનરાજ, પુંજ ધરે સોહૈ;
સબ જીતે અક્ષસમાજ, તુમ સમ અરુ કો હૈ. નંદી૦

(અક્ષતાન્)

તુમ કામવિનાશક દેવ, ધ્યાઊં ફૂલનસૌં;
લહું શીલલચ્છમી એવ, છૂટૂં સૂલનસૌં. નંદી૦

(પુષ્પં)

નેવજ ઈન્દ્રિય બલકાર, સો તુમને ચૂરા;
ચરુ તુમ ઢિગ સોહૈ સાર, અચરજ હૈ પૂરા.
નંદીશ્વર શ્રીજિનધામ બાવન પુંજ કરોં,
વસુ દિન પ્રતિમા અભિરામ આનંદભાવ ધરોં.

(નૈવેદ્યં)

દીપકકી જ્યોતિ પ્રકાશ, તુમ તનમાંહિ લસૈ;
ટૂટૈ કરમનકી રાશ, જ્ઞાનકણી દરસૈ. નંદી૦

(દીપં)

કૃષ્ણાગરુ ધૂપ સુવાસ, દશ દિશિ—નારિ વરૈં;
અતિ હરષભાવ પરકાશ, માનોં નૃત્ય કરૈં. નંદી૦

(ધૂપં)

બહુવિધ ફલ લે તિહું કાલ, આનંદ રાચત હૈં;
તુમ શિવફલ દેહુ દયાલ, સો હમ જાચત હૈં. નંદી૦

(ફ્લં)

યહ અર્ઘ કિયો નિજ હેત, તુમકો અરપત હોં;
'ઘાનત' કીનો શિવખેત, ભૂમિ સમરપત હોં. નંદી૦

(અર્ઘં)

જયમાલા

(દોહા)

કાર્તિક ફાગુન સાઢકે,[૧] અંત આઠ દિન માહિં;
નંદીશ્વર સુર જાત હૈં, હમ પૂજૈં ઈહ ઠાહિં. ૧

૧. કાર્તિક, ફાગણ તથા અષાઢ માસના સુદ આઠમથી પૂર્ણિમા સુધીના આઠ દિવસોને નંદીશ્વર—અષ્ટાહ્નિકા કહેવાય છે.

એકસૌ ત્રેષઠ કોડિ જોજન મહા,
લાખ ચૌરાસિયા એક દિશમેં લહા;
આઠમોં દ્વીપ નંદીશ્વરં ભાસ્વરં,
ભૌન બાવન પ્રતિમા નમોં સુખકરં. ભૌન૦ ૨

ચારદિશિ ચાર અંજનગિરિ રાજહીં,
સહસ ચૌરાસિયા એકદિશ છાજહીં;
ઢોલસમ ગોલ ઉપર તલેં સુંદરં. ભૌન૦ ૩

એક ઈક ચાર દિશિ ચાર શુભ બાવરી,
એક ઈક લાખ જોજન અમલ જલભરી;
ચહું દિશા ચાર વન લાખ જોજન વરં. ભૌન૦ ૪

સોલ વાપીનમધિ સોલ ગિરિ દધિમુખં,
સહસ દશ મહા જોજન લખત હી સુખં;
બાવરી કૌન દોમાહિં દો રતિકરં. ભૌન૦ ૫

શૈલ બત્તીસ ઈક સહસ જોજન કહે,
ચાર સોલૈ મિલે સર્વ બાવન લહે;
એક ઈક સીસ પર એક જિનમંદિરં. ભૌન૦ ૬

બિંબ અઠ એકસૌ રતનમય સોહહીં;
દેવ દેવી સરવ નયન મન મોહહીં;
પાંચસૈ ધનુષ તન પદ્મ આસન પરં. ભૌન૦ ૭

લાલ નખ મુખ નયન શ્યામ અરુ સ્વેત હૈં,
શ્યામ રંગ ભોંહ સિર કેશ છબિ દેત હૈં;
વચન બોલત મનોં હઁસત કાલુષ હરં. ભૌન૦ ૮

કોટિ શશિ ભાનુ દુતિ તેજ છિપ જાત હૈ,
મહા વૈરાગ પરિણામ ઠહરાત હૈ;
બયન નહિ કહૈ લખિ હોત સમ્યક્ધરં. ભૌન૦ ૯

(સોરઠા)

નંદીશ્વર જિનધામ, પ્રતિમા મહિમા કો કહૈ;
'ઘાનત' લીનોં નામ, યહી ભગતિ શિવસુખ કરૈ. ૧૦

ૐ હ્રીઁ શ્રીનંદીશ્વરદ્વીપે પૂર્વપશ્ચિમોત્તરદક્ષિણે દ્વિપંચાશત્જિનાલયસ્થ જિનપ્રતિમાભ્યઃ મહાર્ઘં નિ૦

❀

શ્રી સિદ્ધચક્રપૂજા

(અડિલ્લ છંદ)

અષ્ટ કરમ કરિ નષ્ટ અષ્ટ ગુણ પાયકૈં,
અષ્ટમ વસુધા માંહિ વિરાજે જાયકૈં;
ઐસે સિદ્ધ અનંત મહંત મનાયકૈં,
સંવૌષટ્ આહ્વાન કરૂં હરષાયકૈં.

ૐ હ્રીઁ ણમો સિદ્ધાણં સિદ્ધપરમેષ્ઠિન્! અત્ર અવતરત અવતરત સંવૌષટ્ ઇતિ આહ્વાનનમ્—અત્ર તિષ્ઠત તિષ્ઠત ઠઃ ઠઃ સ્થાપનમ્, —અત્ર મમ સન્નિહિતો ભવત ભવત વષટ્ સન્નિધિકરણમ્.

(ત્રિભંગી છંદ)

હિમવનગત ગંગા, આદિ અભંગા, તીર્થ ઉતંગા સરવંગા,
આનિય સુરસંગા, સલિલ સુરંગા, કરિ મન ચંગા ભરિ ભૃંગા;
ત્રિભુવનકે સ્વામી ત્રિભુવનનામી, અંતરજામી, અભિરામી,
શિવપુરવિશ્રામી, નિજ નિધિ પામી, સિદ્ધ જજામી શિરનામી.

ૐ હ્રીઁ અનાહતપરાક્રમાય સર્વકર્મવિનિર્મુક્તાય શ્રીસિદ્ધચક્રાધિપતયે જન્મજરામૃત્યુવિનાશનાય જલં નિર્વપામીતિ સ્વાહા.